झाडी काली मिर्च (बुश पेप्पर)

पाइपरेसिया परिवार का काली मिर्च एक दीर्घ काल फसल है। सहायक वृक्षों पर बढनेवाले काली मिर्च के पार्श्व शाखाओं को झाडी काली मिर्च बनाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। झाडी काली मिर्च को हम साधारण खेतों, नारियल के बागों में तथा जगह की कमीवाले स्थानों में घर के बागों, टेरेसों एवं गमलों में बढाया जा सकता है। साल भर में घरेलू उपभोग के लिए आवश्यक हरे काली मिर्च की उपलब्धता इसकी विशेषता है। झाडी काली मिर्च के फसलन का खर्च भी साधारण कली मिर्च की अपेक्षा कम है। इसके अलावा छः महीने होने पर ही इसका फसलन कर सकते हैं।

पौधे की तैयारी

उच्च उत्पादन क्षमतावाले रोगकीटबाधा से मुक्त काली मिर्च बेलों से लगभग एक वर्ष के उम्रवाले छोटे मुकुल युक्त पार्श्व शाखाओं को काट लेना चाहिए। शाखाओं में कोमल पत्ते न होने की अवस्था में तथा फसलन के बाद, पार्श्व शाखाओं को संचित करना अच्छा है। इसे बडे सबेरे या शाम को बेलों से काटकर एक बाल्टी की पानी में संचित करने पर जल अभाव के कारण होने वाली मुरझाई से शाखाओं को बचा सकते हैं। इसके 0.2 प्रतिशत (एक लिटर पानी में 2 ग्राम) गाढता के कोपर ऑक्सी क्लॉराइड लेय में 20-30 मिनुट तक डुबोकर रखना चाहिए। उसके बाद 3-4 मुकुल वाले टुकडे करके काट लेना है। इस तरह तैयार किये शाखाओं के निचले भाग एक तेज़ चाकू से ढीले काटकर कटे हुए भाग को आईबीए या एएए हॉरमॉन घोल में या ऐसे होने वाले हॉरमॉन चूर्ण में डुबोने के बाद (केराडिक्स, रूटक्स जैसे)

अधिक दिखने वाले चूर्ण को हटाकर एक तिहाई सड़े हुए नारियल जटे के खाद (कम्पोस्ट) मिश्रण भरे हुए पोलीथीन कवर (45 x 30 से. मी.) में रोपण करना है। रोपण के पहले ऐसी शाखाओं के आधे पत्तों को हटाना पत्तों के जलांश के नष्ट को कम करने में सहायक होंगे। एक ही कवर में 3-4 शिखरों का रोपण कर सकते हैं। जलांश नष्ट न होने के लिए पोलीथीन बैग का मुह भाग एक रस्सी से बॉधकर चित्र की तरह छाया में लटकाना है।

रोपण के 45 से 50 दिन होने पर लगभग 5-6 जडें होता है। इस समय मिट्टी, रेत एवं सूखे गोबर का चूर्ण समान अनुपात में भरे हुए पोलीथीन बैग (25x15 से. मी.) में पुनर्रोपण करके छाया में रखकर आवश्यकतानुसार सिंचाई करना चाहिए। यह तीन-चार महीने के अन्दर अच्छे जड़युक्त झाडी काली मिर्च पौधे बन सकते हैं।

नारियल जटे के बदले मिट्टी, रेत तथा सूखे गोबर का चूर्ण समान अनुपात में लेकर बनाये मिश्रण में भी जड़ लगाया जा सकता है। इस तरह पौधे तैयार करने के लिए 15x10 से. मी. आकार के पोलीथीन बैग में उपरोक्त मिश्रण भरकर होरमोन घोल में डुबाए पार्श्व शाखाओं का रोपण करते हैं। रोपण के बाद चित्र के अनुसार एक पोलीथीन बैग से ऊपरी भाग को ढककर छाया में रखकर सींचना चाहिए। बडी मात्रा में पौधे तैयार करने के लिए हर एक पोलीथीन बैग को ढकने के बदले सभी बैगों को एक नमीयुक्त चेंबर में रखकर जडें लगा सकते हैं। इसके लिए पी वी सी पाइप को 'O' आकार में मुडकर उसके ऊपर पोलीथीन शीट फैलाकर फर्श के ऊपर नमी बनाये जा सकते हैं, नहीं तो 75 से. मी. गहराई तथा ढेंड मीटर चौडाई में आवश्यकतानुसार फर्श में फर्श स्तर के नीचे गड्ढे बनाकर नमी के लिए कमरे जैसा तैयार कर सकते हैं। इसके अन्दर पोलिथीन बैग में तैयार किये पौधे रखकर पोलीथीन शीट से ढक लेना चाहिए। दोनों तरह कमरे की नमी कम होने पर सिंचाई करना चाहिए। इसके अलावा इसमें कभी सूरज का ऊर्जा सीधे नहीं पडना चाहिए (चित्र देखना)। सितम्बर से जनवरी तक के महीने झाडी काली मिर्च के पौधे तैयार करने के लिए सबसे उचित समय है। इस तरह कोई भी प्रजाती को झाडी काली मिर्च बना सकते हैं। भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित श्रीकरा, शुभ्रकरा, थेवम आदि के साथ केरल कृषि विश्वविद्यालय के पन्नियूर 1 से 9 तक की प्रजातियां इसके लिए उचित है। पार्श्व शाखाओं में जड़ लगाने के सिवा त्वरित म्लानी के सह्य ब्रसील के वन्य काली मिर्च (पाइपर कोलुब्रिनम) में कलम बॉधकर झाडी काली मिर्च के कलमी पौधे बना सकते हैं। इसके लिए पार्श्व शाखाओं का कलम बॉधकर कलमी झाडी काली मिर्च तथा आरोही प्ररोह एवं लंब दिशा के प्ररोहों को कलम बॉधकर साधारण पेडों में बढाने लायक झाडी काली मिर्च तैयार कर सकते हैं। दो तीन महीने के जड़ लगाये ब्रसील के वन्य काली मिर्च को दोनों तरह के पौधे बनाने के लिए मूल वंशज के रूप में इस्तेमाल करते हैं। कलम बॉधकर एक महीने के बाद कलमी पौधे तैयार कर सकते हैं।

गमले में रोपण करने की विधि

लगभग 4-6 महीने के झाडी काली मिर्च पौधों को लगभग 10 कि. ग्राम रोपण मिश्रण (मिट्टी, रेत एवं गोबर चूर्ण समान अनुपात में लेकर तैयार किये मिश्रण) भरे हुए गमले में रखना हैं। रोपण के बाद सूखे पत्ते रखकर दिन में दो बार सिंचाई करना चाहिए। इसे कम से कम दो हफ्ते छायेदार जगह में रखना चाहिए। फिर इन पौधों को आंशिक रूप से छाया मिलने वाले बगीचे या टेरस में रख सकते हैं।

वर्ष में एक बार प्रति गमले 100 ग्राम सूखे गोबर चूर्ण, दो महीने में एक बार दो ग्राम यूरिया, 3 ग्राम की मात्रा में सूपर फॉस्फेट एवं मूरियट ऑफ पोटैश या एन पी के मिश्रण (18:18:18) एक चम्मच की मात्रा में खाद लगा सकते हैं। रासायनिक खाद के बदले विभिन्न जैविक खाद जैसे कैंचुआ खाद, मूंगफली केक, नीम केक, हड्डी चूर्ण, पतला बायोगैस स्लरी आदि का भी इस्तेमाल किया जा सकता हैं। चार महीने के अन्दर प्रति गमले 50 ग्राम चूना या डोलोमाइट डालना भी अच्छा होता है।

भूमि में रोपण करने की विधि

2 x 2 मीटर अन्तराल में 0.5 मीटर समान आकार के गड्ढे बनाकर उसमें ऊपरी मिट्टी, खाद या गोबर समान अनुपात में डालकर उसमें पौधे लगाना चाहिए। एक हेक्टेयर में 2500 पौधे लगा सकते हैं। पौधों को छाया मिलने के लिए 4 मीटर अन्तराल में छायेदार पेड़ों को लगाना चाहिए। साढे सात मीटर अन्तराल में लगाए नारियल के बाग में 2 x1.8 मीटर दूरी पर झाडी काली मिर्च का रोपण कर सकते हैं।

भूमि में लगाए पौधों को वर्ष में एक बार 5 कि. ग्राम गोबर, चार महीने के अन्दर 20 ग्राम यूरिया, 25 ग्राम सूपर फॉस्फेट, 30 ग्राम पोटैश आदि डाल सकते हैं। वर्ष में दो बार (जून, सितम्बर) 0.2% (2 ग्राम एक लिटर पानी में) कोपर ऑक्सीक्लॉराड घोल प्रति पौधे 100 मि. लिटर की दर में पौधों को डाल देना हैं। महीने में एक बार अकोमिन 3 मि. लि. प्रति लिटर पानी की दर से पौधों को छिडकना रोग बाधा से बचाने के लिए उत्तम है।

पूरी तरह जैविक रूप में खेती करने वाले पौधों में रासायनिक कवक कीटनाशकों के बदले प्सूडोमोनस घोल (20 ग्राम एक लिटर पानी में), नीम का साबून (15 ग्राम एक लिटर पानी में) नीम आधारित कीटनाशक (5-7 मि. लिटर प्रति लिटर पानी की दर से) आदि आवश्यकता के अनुसार इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके अलावा ट्राइकोडेरमा संपुष्ट गोबर का चूर्ण, नीम केक आदि का उपयोग करना म्लानी रोग कम करने के लिए सहायक होता है।

पौधे के बढाव के अनुसार वर्ष में एक पौधे से लगभग 500 ग्राम से 1.5 कि. ग्राम तक हरे काली मिर्च मिल सकता है।

झाडी काली मिर्च (बुश पेप्पर)

संपादक:
सी.के. तंकमणि
वी. श्रीनिवासन
एस. हमज़ा
पी. एस. मनोज
लिजो तोमस
एन. प्रसन्नकुमारी

प्रकाशक: निदेशक, भाकृअनुप – भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान
कोषिक्कोड, केरल, भारत – 673 602

प्रारुप : ए. सुधाकरन

फोटो श्रेय : भाकृअनुप – भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान
कोषिक्कोड

सितंबर 2019